हिन्दी-विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय - ईदगाह प्रेमचन्द की एक विशिष्ट कहानी है। कैसे?

ईदगाह कहानी सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की एक विशिष्ट कहानी है, जिसे उन्होंने दो उद्देश्यों को लेकर लिखा है। एक तो त्याग, सद्भाव, प्रेम, विवेक आदि मानवीय गुणों को सर्वोपरिता प्रमाणित करने के लिए और दूसरा यह बताने के लिए कि धन की गोद में पलनेवाले बच्चे अक्सर खिलाड़ी होते हैं और अभाव में जीवन व्यतीत करनेवाले बालकों में बुद्धि और विवेक अधिक होती है।

कहानी-कला की दृष्टि से ईदगाह कहानी हिन्दी साहित्य के सभी मापदण्डों पर खरी उतरती है जिसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट कर सकते हैं

ईद का त्योहार है। अमीर-गरीब सभी खुश हैं, बच्चे विशेष रूप से उत्साहित हैं। स्त्रियाँ अपने बच्चों को ईदगाह भेजने के लिए उत्साहित हैं महमूद, नूरे, सम्मी, मोहसिन आदि बच्चे अपनी

जेबों में पैसा खनखनाते हुए ईदगाह जा रहे हैं। ये सभी धनी बच्चे हैं।
इन सभी बच्चों में एक बच्चा हामीद है जो गरीब है, परन्तु वह संतुष्ट और खुश है। हामीद पाँच वर्ष का है। वह एक अनाथ बालक है। उसका पालन पोषण उसकी बूढ़ी दादी अमीना करती है। ईद का त्योहार मनाने के लिए हामीद के पास अधिक पैसे नहीं थे, फिर भी वह संतुष्ट है, आशावान है।
वह इस आशा के साथ जीता है कि उसके पिता धन कमाने गये हैं और उसकी माँ भगवान के घर से अच्छी अच्छी चीजें लाने गयी है। माता-पिता के वापस आने पर उसके पास भी पर्याप्त धन होगा और तब वह अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति कर सकेगा।
अपनी उदास दादी को तसल्ली देकर हामीद गाँव के बच्चों के साथ ईदगाह के लिए प्रस्थान करता है। बच्चे खुशी के साथ शहर पहुँचते हैं। शहर के बाग, आलीशान मकान, बंगले, अदालत कचहरी बच्चों को आकर्षित करता है। सभी ईद की अदा कर एक दूसरे से गले मिलते हैं।

उसके बाद सभी बच्चे खिलौने और मिठाइयों की दुकान पर पहुँचते हैं। कुछ लड़के मिठाइयाँ खरीदते हैं कुछ अपनी पसंद के खिलौने खरीदते हैं।

हामीद के पास तीन पैसे थे जिससे न तो वह मिठाइयाँ खरीद सकता था और न ही कोई खिलौना। उसे सभी लड़कों के उपहास का पात्र भी बनना पड़ता है परन्तु हामीद आगे बढ़कर सोचता है कि दादी के पास चिमटा नहीं है इसलिए रोटियाँ सेकते समय उसकी दादी का हाथ अक्सर जल जाता है। हामीद उस तीन पैसे से दादी के लिए चिमटा खरीद लेता है, उसके लि इसके लिए मजाक उड़ाते हैं लेकिन चिमटे की उपयोगिता उन्हें इस तरह समझाता है कि सभी बच्चे हामीद की तारीफ करने लगते हैं।

घर वापस आते-आते सभी बच्चों के खिलौ टूट जाते हैं लेकिन हामीद का चिमटा सही-सलामत है। वह प्रसन्नता के साथ चिमटा अपनी दादी मीना को देता है। जब दादी को पता चलता है हामीद ने चिमटा क्यों खरीदा तो वह हामीद दादी पर आश्चर्यचकित हो जाती है। वह

Appointments

अपनी इच्छाओं को भूल कर आशीर्वाद देती है।
दादी को इस बात पर गर्व है कि वह एक त्यागी,
स्नेही पोते की दादी है जिसके पास विवेक और बुद्धिमत्ता
का असीम भंडार है।

उद्देश्य की दृष्टिकोण से ईदगाह प्रेमचन्द
की सफल कहानी है। शहरी और ग्रामीण जीवन का
अन्तर, धनी और गरीब लोगों के रहन-सहन और
उनके विचारों का अंतर प्रस्तुत करना कहानीकार का मुख्य
उद्देश्य था जिसे उन्होंने बखूबी से प्रस्तुत किया।

प्रेमचन्द ने इस कहानी में बाल मनोविज्ञान को
स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने यह साबित करने
का प्रयास किया है कि आशा, बुद्धि, विवेक और कल्पनाशीलता
का उपयोग कर प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल
बनाया जा सकता है। आशावान व्यक्ति के लिए कुछ
भी असंभव नहीं है। हामिद गरीब है, लेकिन बु-
द्धिमान और विवेकी है। वह मिठाई और खिलौना की
जगह चिमटा खरीदकर भी अपने अन्य मित्रों से अधिक
प्रसन्न है, क्योंकि वह ईद की खुशी अपनी दादी के साथ
मना चाहता है। वह दूसरों की खुशी में ही अपनी खुशी देखता है

I have not failed. I've just found 10,000 ways that won't work. – Thomas A. Edison